(1)

बौद्धिक सत्याग्रह

समाज में ज्ञान पर वार्त्ता–III

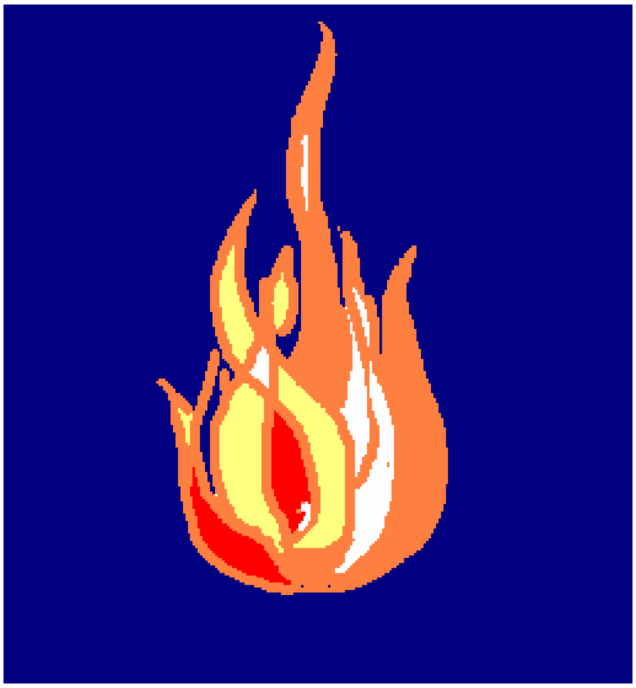

विद्या आश्रम, वाराणसी

गाँधी विद्या संस्थान, वाराणसी

इण्डिजन रिसर्च फाउण्डेशन, पुणे

इण्डिया सोशल फोरम, दिल्ली

नवम्बर, 2006

इण्डिया सोशल फोरम, दिल्ली, 2006

निमंत्रण

बौद्धिक सत्याग्रह

11 नवम्बर 2006, दोपहर 1.00 से 4.00

साथियों,

कम्प्यूटर और संचार उद्योग दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। इंटरनेट को मानवता के लिये एक वरदान बताया जा रहा है। इन क्षेत्रों की कम्पनियों ने पिछले दस साल में हजारों करोड़ का धन्धा किया है। अभूतपूर्व मुनाफा कमाया है और अकूत सम्पत्ति इकट्ठा की है। इन्हें सभी सरकारें बढ़ावा दे रही हैं। बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता दे रही हैं। इसी काल में किसान, कारीगर और मजदूर परिवार भयानक उजाड़ का शिकार हुए हैं। जमीनें गई हैं, धन्धे उजड़ गये हैं, नौकरियों का अकाल पड़ गया है। क्या इन दोनों में कोई रिश्ता नहीं है ?

वैश्वीकरण का सबसे मजबूत आधार सूचना और संचार में बताया जाता है। अमेरिकी युद्ध एक ज्ञान आधारित समाज बनाने के रास्ते खोल रहे हैं। सूचना युग और ज्ञान आधारित समाज ये ही इस गति के नये मुहावरे हैं। सूचना के संगठन और संचार तथा ज्ञान का नया स्थान इन्टरनेट है। किसानों, कारीगरों, आदिवासियों और महिलाओं के पास जो ज्ञान है, समाज में जो ज्ञान फैला हुआ है, सामान्य जीवन जिस ज्ञान से संचालित होता है उसे कम्प्यूटर की गिरफ्त में लाने के महाभियान चल रहे हैं। इस पर सैकड़ों करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे हैं। यह सब फिर इन्टरनेट पर उच्चशिक्षित लोगों के हाथ में पूँजीपतियों की दुनिया की सेवा में उपलब्ध हो जायेगा। हमारी गति और जीवन की संभावनाओं को खण्डित करने के लिए हमारे ही ज्ञान का प्रयोग उनके द्वारा किया जायेगा। हमारा ही हुनर, हमारी ही जानकारियाँ, हमारे ही संगठन के तरीके और हमारा ही श्रम हमारे खिलाफ हमें दबाने के लिये और हमारे शोषण के लिये इस्तेमाल किया जायेगा।

इन्टरनेट पर होने वाली इन क्रियाओं को ज्ञान प्रबन्ध कहते हैं। सूचना युग में इसे ही ज्ञान कहा जा रहा है। यह अमेरिका का ज्ञान का सिद्धान्त है। दुनिया भर में हो रहे अमेरिका के विरोध को सुसंगठित होने के लिये यह समझना जरूरी है कि ज्ञान प्रबन्धन ही वह शास्त्र है जिसमें शोषण और उत्पीड़न की नई व्यवस्थाओं का सैद्धान्तिक आधार है। और समाज में व्याप्त ज्ञान, लोकविद्या ही, आम आदमी का वह अस्त्र है जिसके बल पर इन व्यवस्थाओं को अंत तक खड़ी रह सके ऐसी चुनौती दी जा सकती है और इस चुनौती का रूप है– बौद्धिक सत्याग्रह।

चूँकि ज्ञान प्रबन्धन साइंस के ऊपर अपना एक स्थान बनाना चाह रहा है, ज्ञान की सभी वास्तविक विधाओं के नियंत्रण और संचालन की विद्या के रूप में अपने को विकसित कर रहा है इसलिये विद्या के जगत में एक भूचाल–सा आ गया है। समाज और प्रकृति की दार्शनिक व्याख्याओं की पिछले चार सौ साल में पश्चिम में बनी हुई जड़ें हिल गई हैं। नतीजेस्वरूप समाज के लिये महत्त्व का दार्शनिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संवाद ज्ञान–संवाद के नाम से एक–दूसरे से मिल–जुल गया है। हमारा उद्देश्य इस संवाद में लोकविद्या दृष्टिकोण से दखल लेने का है। हमारा उद्देश्य इस संवाद को उस भाषा और मुहावरे में ढालने का है जो आम आदमी के समझ में आती हो, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के समझ में आती हो और इसमें उनकी भागीदारी के रास्ते खोलती हो।

इसी दिशा में कदम बढ़ाने के लिये इण्डिया सोशल फोरम में हमने बौद्धिक सत्याग्रह के नाम से एक बहस आयोजित की है। आप अवश्य आइये और नई परिस्थितियों से जूझने के रास्ते खोजने में अपनी भागीदारी निभाइये।

आयोजक

विद्या आश्रम, वाराणसी, फोन : 0542–2595120
गाँधी विद्या संस्थान, वाराणसी, फोन : 0542–2431099
इण्डिजन रिसर्च फाउण्डेशन, पुणे, फोन : 020–27298293

बौद्धिक सत्याग्रह

एक लोकोन्मुख ज्ञान वार्ता

समाज में ज्ञान पर वार्ता

नवम्बर 11, 2006

इण्डिया सोशल फोरम, दिल्ली

आयोजक

विद्या आश्रम, सा 10/82 ए, अशोक मार्ग,सारनाथ,वाराणसी–221007

फोनः 0542–2595120, 2595196

ई–मेलः budhey@gmail.com

गाँधी विद्या संस्थान, राजघाट, वाराणसी–221001

फोनः 0542–2431099

ई–मेलः gisvns@yahoo.co.in

इण्डिजन रिसर्च फाउण्डेशन, 247/3/1, सदाफुली पार्क, बानेर, पुणे–411007

फोनः 27298293

ई–मेलः k.k.surendran@gmail .com

विद्या आश्रम

विद्या आश्रम सारनाथ स्थित एक ऐसा स्थान है जो इसे समर्थन देने वाले लोगों के सहयोग से चलता है। इसकी स्थापना वर्ष 2004 में हुई। यह विद्या के सवाल पर एक नये संवाद के लिये और उसमें बराबरी से लोकविद्या दृष्टिकोण की भागीदारी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसका उद्देश्य विद्या की नई गति के निर्माण का ऐसा स्थान बनाना है जहाँ विद्या और सामान्य जीवन के बीच सामंजस्य हो, एक–दूसरे को ताकत देने वाली गति का निर्माण हो।

●

गाँधी विद्या संस्थान

गाँधी विद्या संस्थान केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा समर्थित एक सामाजिक अध्ययन का स्थान है। इसकी स्थापना राजघाट, वाराणसी में सन् 1960 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने की थी। संस्थान का यह प्रयास रहा है कि गाँधी विचार से प्रेरित आन्दोलनों और सामाजिक विज्ञान के बीच एक सेतु बने। जयप्रकाश जी का मानना था कि अगर यह प्रयास सफल होता है तो इसके नतीजे अमूल्य होंगे।

●

इण्डिजन रिसर्च फाउण्डेशन

इण्डिजन रिसर्च फाउण्डेशन की स्थापना सन् 2001 में पुणे में हुई। इसका प्रमुख उद्देश्य कम्प्यूटर एवं संचार प्रौद्योगिकी के समाज के साथ रिश्ते की समीक्षा करना है। सूचना–युग के प्रारम्भ के साथ हो रहे सामाजिक परिवर्तनों की ज्ञान आधारित दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक व्याख्या इसके मुख्य कार्यों में है।

●

सहयोग राशि : रुपये 25/– (या इससे अधिक की अपेक्षा के साथ)

मुद्रण : सतनाम प्रिण्टिंग प्रेस, पाण्डेयपुर, वाराणसी

विद्या आश्रम द्वारा प्रकाशित

विद्या आश्रम, सा 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ,वाराणसी–221007
फोनः 0542–2595120, 2595196
ई–मेलः budhey@gmail.com

बौद्धिक सत्याग्रह

साथियों,

यह एक वार्ता का आवाहन है। एक ऐसी वार्ता का जो हमें बौद्धिक सत्याग्रह के लिये तैयार करती है। अगर हम यह समझें और मानें कि विद्या का वास्तविक घर लोगों के सामान्य जीवन में है तो हमें इस सत्याग्रह का अर्थ समझ में आने लगता है। दो सौ वर्शों के साम्राज्यवादी और औपनिवेि ाक भाासन में यदि आम जनता, किसान, कारीगर, महिलायें, आदिवासी, छोटे–मोटे कारोबारी आदि अपने ज्ञान को, न्याय और तर्क के अपने तरीकों को, संगठन और ि ाक्षा के अपने विचारों को, अपने मूल्यों और सम्बन्धों को बचाकर रख सके हैं और उनके साथ खुद भी बचे रह सके हैं तो इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उन्होंने बौद्धिक सत्याग्रह का रास्ता अपनाया। अब कम्प्यूटर और संचार की प्रौद्योगिकी ने साम्राज्यवाद के पुनर्संगठन और एक नये साम्राज्य के निर्माण का आधार तैयार किया है। अमेरिका के नेतृत्व में यह हो भी रहा है। हम जो सवाल उठा रहे हैं वह यह है कि क्या सूचना के युग में बौद्धिक सत्याग्रह लोगों का साम्राज्य को चुनौती का प्रमुख हथियार है ?

आज अगर हम विद्या किसके पास है और कहाँ है इसके बारे में सोचें तो मुख्य रूप से चार स्थान नज़र आते हैं––(i) धार्मिक मठ एवं सम्प्रदाय, (ii) वि वविद्यालय, (iii)इंटरनेट और (iv) सामान्य जीवन। इन स्थानों पर विद्या के प्रकार अलग–अलग हैं, उनकी समझ और द ीन अलग हैं, उसकी भूमिका भी अलग हैं।

धार्मिक मठों एवं सम्प्रदायों की विद्या में एक पारलौकिक तत्व होता है। इस विद्या के परीक्षण के कोई ठोस आधार (कसौटियाँ) नहीं होते। इस विद्या और इसके समाज में विस्तार के चलते विभिन्न मठ एवं मठाधी ा साम्प्रदायिक राजनीति का समर्थन करते हैं।

वि वविद्यालय की विद्या का आधार साइंस में है। 17 वीं सदी के यूरोप से इसका स्पश्ट विकास देखा जा सकता है। यूरोप का साम्राज्य दुनियाभर में फैला। औद्योगिक क्रांति और उपनिवे ीकरण हुआ, दुनियाभर के समाज उजड गये और उनके संसाधन भरपूर लूटे गये। इन सबमें साइंस ने आधार प्रदान किया और यूरोप के भाासक वर्गों का कदम से कदम मिलाकर साथ दिया।

इन्टरनेट यह विद्या का नया स्थान है। यहाँ विद्या ज्ञान–प्रबन्धन के रूप में आकार ले रही है। इसमें सोचने का तरीका, तर्क की पद्धति, खोज और नवनिर्माण के तरीके सब कुछ वि वविद्यालयीय

विद्या से अलग हैं। यह संसाधन जुटाने में अभूतपूर्व भूमिका निभा रही है। भाासक वर्गों की पुनर्रचना और अन्य वर्गों के साथ सम्बन्ध के नये प्रकार ईजाद कर रही है। वास्तव में यह एक नई दुनिया की आधारि ाला तैयार करती है। इस नई दुनिया को फिलहाल सूचना युग कहा जा रहा है। दुनिया के गरीबों के लिये उत्थान के नये वादे इसके प्रचार–प्रसार का हिस्सा हैं। बहरहाल 1990 में इन्टरनेट आया है और पहले 15 वर्शों में नये किस्म के पूँजीपतियों ने अकूत सम्पत्ति बनाई है और गरीबों की संख्या और गरीबी में कोई अंतर नही आया है। अगर हम अपने दे ा (भारत) को देखें तो किसानों, मज़दूरों, कारीगरों और आदिवासियों ने लगातार उजाड़ का सामना किया है, उनकी गरीबी बढ़ी है।

सामान्य जीवन एक ऐसी विद्या का स्थान है जिससे सबका परिचय है। कारीगरों या किसानों की विद्या केवल कोई तकनीकी जानकारियों और क्षमताओं का भण्डार नही होती। स्वास्थ और ि ाक्षा के विचार भी उसके अभिन्न अंग होते हैं। महिलाओं और आदिवासियों की तरह ही उनकी भी एक प्राकृतिक मूल्यों पर आधारित वि वदृश्टि होती है। यह लोकविद्या है जो सत्य और न्याय के आग्रह पर टिकी होती है। यह कोई इन लोगों के पास आधुनिक विकास के बावजूद बची हुई चीज नहीं है। इसमें अपनी गति है। औद्योगिक समाज की तकनीक, ि ाक्षा के प्रकार, स्वास्थ्य रक्षा के तरीके इत्यादि बडे पैमाने पर लोकविद्या में आत्मसात हैं। ज्ञान आधारित समाज से भी कुछ लेने में सामान्य जीवन और लोकविद्या को कोई दिक्कत नही है, बस उसकी कसौटी अपनी होती है, परख के तरीके अपने होते हैं, उद्दे य अपने होते हैं। औद्योगिक समाज के आक्रामक तरीकों के बावजूद लोग ज़िन्दा रह सके और अपना एक जीवन बरकरार रख सके इसमें लोकविद्या की बड़ी भूमिका है। लोकविद्या आचरण ही बौद्धिक सत्याग्रह है।

हमें विद्या पर ऐसी बहस की आदत है जो सबके समझ में नहीं आती। इसलिये नहीं कि लोग कम पढ़े–लिखे हैं बल्कि इसलिये कि वि वविद्यालय का तरीका (अब इंटरनेट का भी) ऐसा बनाया गया है कि सबके समझ में न आये। अगर एक दूसरी दुनिया बननी है तो यह ज़रूरी है कि विद्या की बहस सबको समझ में आये। यदि ऐसा नही हुआ तो बदलाव के नाम पर इसी दुनिया का एक दूसरा संस्करण तैयार हो जायेगा। इसलिये विद्या पर बहस बढ़ाने के लिये हम यह तरीका अपना रहे हैं। **सूत्र वाक्यों पर अलिखित ज़मीनी बहस।** सही–गलत की बहस, फायदे–नुकसान की बात, सुंदर–असुंदर की चर्चा। आगे के पेजों में आज हो रहे बदलाव को लोकविद्या दृश्टि से चित्रित करने का प्रयास किया गया है यानि इस बदलाव और समाज के विद्या पक्ष के बीच रि ते की बात की गई है। यह भी कहा जा सकता है कि इस बदलाव के विद्यागत आधार को खोलकर रखने की कोि ा ा की गई है। हम भी बृहत समाज के बौद्धिक सत्याग्रह में भाामिल हो सकें इसकी तैयारी की एक कोि ा ा की गई है।

खुलकर बोलिये और असहयोग का रास्ता अपनाइये

बदलाव के नाम

वैश्वीकरण

दुनिया के हर कोने से, हर गतिविधि पर हिस्सा (पूँजी) उठाने की व्यवस्था

बाजारीकरण

मूर्त और अमूर्त सभी को बाजार में बेचने योग्य बनाने की होड़।

सूचना–संचार

सूचना को पूँजी का रूप देने की क्रिया।

कारपोरेट दुनिया

पूँजी पर एकाधिकार बनाने वाले व्यावसायिक संस्थान

बदलाव के स्थान

उद्योग--- बडी इकाई से छोटी इकाई

या

पहली दुनिया से तीसरी दुनिया

कृि ा—— रासायनिक से जैव

शिक्षा—— विश्वविद्यालय से इन्टरनेट

व्यापार—— दूर का व्यापार

ज्ञान--- साइंस से ज्ञान—प्रबन्धन

लाभ उठाने वाले नये क्षेत्र

साफ्टवेअर उद्योग

मनु य श्रम का कम से कम इस्तेमाल करने की विधा गढ़ने का उद्योग

सूचना के संगठन एवं प्रक्रियाओं की

भा ा तकनीक

संचार

मोबाइल, ई—मेल, इंटरनेट

मीडिया

सिनेमा, टी. वी., इंटरनेट

मनोरंजन

पर्यटन, सिनेमा, टी. वी., संगीत, खेल

शिक्षा

शिक्षा के निजी संस्थान

कम्प्यूटर व प्रबन्धन की शिक्षा

चिकित्सा

सर्जरी पर आधारित चिकित्सा

लोक जीवन पर प्रभाव

नुकसान में	फायदे में
कारीगर	विशेषज्ञ
किसान	उद्योगपति
स्त्रियाँ	व्यापारी
दुकानदार	उच्च शिक्षित
नौजवान	
मज़दूर	
आदिवासी	

नये युग का आरंभ

औद्योगिक समाज का अंत

और

सूचना युग का प्रारंभ

औद्योगिक क्रांति के बाद से धीरे–धीरे करके पूरी दुनिया में ाक्ति आधारित उद्योगों का वर्चस्व हो गया।

अब सूचना तकनीकी यानि कम्प्यूटर और संचार तकनीकी का वर्चस्व बन रहा है।

सूचना तकनीकी का अधिकाधिक इस्तेमाल करने वाले समाज को ही ज्ञान आधारित समाज कहते हैं।

ज्ञान कहाँ है?

इंटरनेट में

यह ज्ञान के संगठन ;संकलन, प्रक्रिया,
सम्प्रे   ाण,संचार,वस्तुकरणद्ध को
ज्ञान का दर्जा देता है।
इसे ज्ञान का प्रबन्धन कहते हैं।

विश्वविद्यालय में

यहाँ ज्ञान साइंस और साइंस आधारित
वि   ायों के रूप में होता है।

समाज में

यहाँ ज्ञान लोक जीवन में बिखरा होता है।
यह **लोकविद्या** है।

साइंस और लोकविद्या

साइंस

औद्योगिक समाज का ज्ञान है।
और
विश्वविद्यालय की विद्या है।
साइंस स्वयं को ज्ञान का एकमात्र वैध स्रोत घोि ात करता है।
साइंस लोकविद्या को ज्ञान का दर्जा नहीं देता।

लोकविद्या

लोकजीवन में गतिशील ज्ञान है।
लोकविद्या में सभी विद्या–परम्पराओं
को स्थान है।
मुख्यतः किसान, कारीगर, आदिवासी, स्त्रियाँ, दुकानदार लोकविद्या
के स्वामी हैं।
यानि
समाज के लगभग 80 फीसदी लोग लोकविद्या के स्वामी हैं।

साइंस और ज्ञान–प्रबन्धन

साइंस

भौतिक जगत की वस्तुओं के गुण, धर्म व व्यवहार को समझने की एक विधा है।
इस विधा का जन्म और विकास
यूरोप में हुआ।
यह औद्योगिक क्रांति का वाहक ज्ञान है।
उत्पादन की गति को बढ़ाने का ज्ञान है।
मशीन और प्रक्रियाओं का ज्ञान है।

ज्ञान–प्रबन्धन

यह अमेरिकी विद्या है।
इस विद्या के अनुसार ज्ञान एक वस्तु (माल) है।
किसी भी वस्तु के उत्पादन के कई तरीके होते हैं। ज्ञान को भी यही लागू है।
ज्ञान की विभिन्न विधाओं से ज्ञान के टुकड़ों को छाँटकर उन्हें पुनर्संगठित कर इस्तेमाल ;बेचनेद्ध योग्य बनाने की क्रिया *ज्ञान का प्रबन्धन* है।

लोकविद्या और ज्ञान–प्रबन्धन

लोकविद्या

लोकविद्या ज्ञान का सबसे बड़ा भण्ड़ार है।

लोकविद्या निजी सम्पत्ति नहीं होती बल्कि समाज की सम्पदा होती है।

लोकविद्या अपने निकट के परिवेश को निरंतर समृद्ध करते हुये समग्र को समृद्ध करने का विचार है।

ज्ञान–प्रबन्धन

ज्ञान–प्रबन्धन ज्ञान को विश्वविद्यालय और समाज दोनों जगह से उठा रहा है।

ज्ञान–प्रबन्धन से ज्ञान पर निजी मालिकाना होता है।
ज्ञान–प्रबन्धन ज्ञान के टुकड़ों को उनके परिवेश से अलग करके उठाता है।

लोकविद्या

- सब ज्ञान लोकविद्या से ुरू होता है और लोकविद्या में वापस आता है।
- जो ज्ञान लोकविद्या में वापस नहीं आता वह आसुरी होता है।
- अमूर्त और आसुरी विद्याओं में चमत्कार और ो ाण दोनो का ही आधार होता है।
- लोकविद्या में कार्य और सिद्धांत में भेद नहीं है।
- लोकविद्या लोगों के हित में, लोकपक्ष लेने वाली विद्या है।
- लोकविद्या पूँजी और सत्ता के दबाव से मुक्त विद्या है।

टकराहट का नया स्थान

ज्ञान और ज्ञान–प्रबन्धन
के बीच टकराहट

यानि

ज्ञानधारी (*विद्याधर*) और
ज्ञान–प्रबन्धन करने–कराने वालों के
बीच टकराहट

समाज

सामंतवाद

मूलतः कृि ा के संगठन से पूँजी और सत्ता बटोरने की व्यवस्था

पूँजीवाद

मूलतः उद्योगों के संगठन से पूँजी और सत्ता बटोरने की व्यवस्था

सूचना युग

मूलतः ज्ञान के संगठन से पूँजी और सत्ता बटोरने की व्यवस्था

क्या फर्क है?

औद्योगिक समाज		ज्ञान आधारित समाज
श्रम का संगठन होता है।		सूचना का संगठन होता है।
साइंस को सर्वश्रेष्ठ ज्ञान का दर्जा है।		ज्ञान–प्रबन्धन को सर्वश्रेष्ठ ज्ञान का दर्जा है।
ज्ञान के संगठन का स्थान विश्वविद्यालय है।		ज्ञान के संगठन को कम्प्यूटर–इन्टरनेट से किया जाता है।
यह उपनिवेशीकरण के मार्फत बना।		यह वैश्वीकरण के साथ बन रहा है।
इसका केन्द्र यूरोप में था।		इसका केन्द्र अमेरिका में है।

एक दूसरी दुनिया के बारे में

ये सारी बातें इस बात का कुछ अन्दाजा देती हैं कि कैसा परिवर्तन हो रहा है। कहते हैं कि एक सूचना युग की भाुरूआत हो चुकी है। लेकिन यह वै वीकरण और अमेरिकी युद्धों की छाया में हो रहा है। और यह भी साफ है कि सूचना के क्रिया कलाप दुनिया के भाासक वर्गों के हाथों में एक ऐसा औज़ार हैं जिनकी मदद से वे अपनी खुद की व राज्य की पुनर्रचना कर रहे हैं तथा अन्य वर्गों के साथ अपने सम्बन्धों को एक नया आकार दे रहे हैं। उत्पादन और बस्ती के पुनर्संगठन लोगों द्वारा प्रतिरोध को जन्म दे रहे हैं। यूरोप और अमेरिका में यह प्रतिरोध वै वीकरण और वि व व्यापार संगठन के विरोध के रूप में सामने आ रहा है। तीसरी दुनिया में शहर के गरीब उनकी बस्तियों और धंधों के उजाड़ के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं व किसान अपनी ज़मीनों को बचाने के लिये संघर्षरत हैं। अमेरिका विरोधी आंदोलन, संघर्श व चेतना विकास दुनियाभर में फैल रहा है, इस्लामी आंदोलन को इसके हिस्से के रूप में ही देखा जाना चाहिये। एक वैकल्पिक दुनिया की बात हो रही है, एक अलग दुनिया बनाने की बात हो रही है।

इन वार्ताओं के वैचारिक आधार औद्योगिक दुनिया की प्रतिरोध की विचारधाराओं के ही नये संस्करण हैं। किन्तु मजदूरों के दृश्टिकोण का विस्तार भी उत्पादन के संगठन, नियंत्रण, प्रबन्धन और मालिकाने के इर्द–गिर्द घूमने से आगे नहीं जा पाता। तीसरी दुनिया का स्वराज–मूलक दृश्टिकोण उस राश्ट्र की कल्पनाओं के बाहर नही निकल पाता जो स्वायत्त आंचलिक समाजों के संघ का ही विकसित रूप है। सूचना युग यह मांग कर रहा है कि एक ऐसा विद्यामूलक दृश्टिकोण तैयार हो जो एक ऐसी अलग दुनिया का सैद्धांतिक आधार बने जो वास्तव में बनाई जा सकती हो। यह **लोकविद्या दृश्टिकोण** है।

लोकविद्या दृश्टिकोण क्या है ?

सूचना के युग का जनता का दृश्टिकोण ही लोकविद्या दृश्टिकोण है। सभी जगहों की विद्या की अपनी परम्परायें होती हैं। वे असली और प्रतिश्ठा योग्य भी होती है। लेकिन यह कहना ठीक न होगा कि उनमें लोगों की समस्याओं का जवाब है या यह कि उनमें एक अलग दुनिया बनाने का आधार है। हालाँकि लोकविद्या और सामान्य जीवन एक दूसरे की प्राणवायु हैं, एक दूसरे में भाक्ति का संचार करते हैं, आपस में एक दूसरे को बचाते हैं और गति भी देते हैं लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि वे आपस में ही पूर्ण हैं। कहा यह जा रहा है कि हम लोकविद्या और सामान्य जीवन से भाुरू करते हैं, सतत् उनमें सन्दर्भ ढूँढते हैं और उनमें ही अंतिम कसौटी की पहचान करते हैं। लोकविद्या दृश्टिकोण सूचना युग का सत्य और न्याय का दृश्टिकोण है।

वै वीकरण और ज्ञान प्रबन्ध ने एक नये सब्ज़बाग का निर्माण किया है। यह सबके लिये सम्पर्क सुविधा का वै वक समाज है। लोकविद्या दृश्टिकोण हमें इस सब्जबाग के झूठ से लड़ने की क्षमता देता है। इस्लामी प्रतिरोधियों, गांधीवादियों, मार्क्सवादियों और असंख्य स्थानीय परम्पराओं और संरचनाओं के अमेरिका विरोधी अभियानों और संघर्शों में एक समानता है। यह समानता उनकी लोकहित और न्याय की प्रतिबद्धता में है जो उनकी अपनी विद्या परम्पराओं से बल हासिल करती है। लोकविद्या दृश्टिकोण इन और इन जैसी सभी विद्या परम्पराओं के प्रति सम्मान का दृश्टिकोण है। लोकविद्या दृष्टिकोण इन विद्या परम्पराओं के समकालीन महत्त्व को उजागर करता है और इन्हें उन नये रूपों में ढालने की क्षमता रखता है जो सूचना युग के शोषणयुक्त सामाजिक आधार को चुनौती दे सके।

लोकविद्या वार्त्ता

कबीर ने मुल्ला और पण्डित दोनों को उनके पाखण्ड और ढोंग के लिये बराबर की फटकार लगाई है। उन्होंने अपने समय के मुल्लावाद और पण्डितवाद के शोषणकारी और अन्यायी ताने–बाने को चीरकर रख दिया। दूसरे शब्दों में उन्होंने सामान्यजन के हित में उस समय के संगठित–धर्म में बसने वाली विद्या (ज्ञान) के सम्मुख सामान्यजन की विद्या का एक मजबूत खम्भा गाड़ दिया। इस खम्भे के आसपास लोग इकट्ठा होने लगे। आज भी कबीर सम्प्रदाय के बाहर कबीर के समर्थक और प्रशंसकों की संख्या कोई कम नहीं है। लेकिन क्या वे मात्र संगठित धर्म में बसने वाली विद्या के कट्टर, पाखण्डी और अन्यायी पक्ष देख पा रहे हैं या विद्या को किन्हीं और स्थानों पर संगठित होते भी देख पा रहे हैं? क्या संगठित विद्या हमेशा सामान्यजन की विद्या (समाज में विद्या) के विरोध में होती है? कबीर के बाद कई सदियाँ बीत चुकी हैं और इस दौरान संगठित विद्या के दूसरे भी नये घर (स्थान) आकार ले चुके हैं। क्या कबीर की आज की दृष्टि से इन्हें पहचाना जा सकता है? क्या आज विश्वविद्यालय और अब कम्प्यूटर–इंटरनेट संगठित–विद्या के नये घर हैं? इनमें संगठित की जा रही विद्या कबीर के समय के मुल्लावाद और पण्डितवाद के नये रूप तो नहीं हैं? यह संगठित विद्या क्या सामान्यजन और वंचित/शोषित–जन के ज्ञान (विद्या) का तिरस्कार कुछ वैसे ही नहीं करती है जैसे कबीर आदि संतों के जीवनकाल में उस समय के बहुसंख्य समाज की विद्या का किया जा रहा था?

हमारे यहाँ औद्योगीकरण के समय यानि 20वीं सदी में विद्या के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव आया। विश्वविद्यालय स्थापित हुए और इनमें औद्योगीकरण की आवश्यकता पूर्ण करने वाली विद्या को संगठित किया जाने लगा। विश्वविद्यालयों में संगठित–विद्या ने समाज में बिखरी विद्या का यानि किसान, कारीगर, आदिवासी और स्त्री–समाजों के पास की विद्या का तिरस्कार किया, उसे निकृष्ट कहा। औद्योगिक समाज का विकास इनकी विद्या को तिरस्कृत और इन समाजों को विकास की धारा से बहिष्कृत करके हुआ। इसके विपरीत मायावी समाज यानि सूचना–संचार–प्रबन्धन–समाज की विद्या का घर कम्प्यूटर–इन्टरनेट है और यह समाज में बिखरी विद्याओं का तिरस्कार नहीं करती। विश्वविद्यालयों ने जिन विद्याओं को निरंतर अपमानित किया और जिन्हें विश्वविद्यालयों में प्रवेश तक करना जुर्म था, कम्प्यूटर–इन्टरनेट इन्हें ढूँढ़–ढूँढ़कर अपने यहाँ आदर से बुलाता है। लेकिन क्या यह उस डायन की तरह तो नहीं है जो बच्चों को लालच–प्रलोभन दे–देकर अपनी झोपड़ी में ले जाती है और अगले ही दिन उन बच्चों की हड्डियाँ झोपड़ी के चारों ओर फेंकी हुई नज़र आती हैं!

विद्या के लुप्त (मृत) हो जाने का भय हो या लुप्त होती विद्या से कमाने का लालच हो, दोनों ही भाव मनुष्य समाज का अहित करते हैं। समाज में बिखरी हुई विद्या का दस्तावेजीकरण विद्या को बचाने का काम तो नहीं ही करने वाला है। हाँ, डायन को मदद जरूर मिलेगी। विद्या के लुप्त होने की चिन्ता मौलिक चिन्ता नहीं है। हमारे समाज में लोकप्रिय दर्शन है कि 'जो आता है वो जायेगा भी'। सभी की मृत्यु अवश्य होनी है। विद्या अपवाद नहीं है। मौलिक चिन्ता यह है कि विद्या के लुप्त होने और नई विद्या के जन्म लेने की इन क्रियाओं से मनुष्य समाज में मानवीय गुणों की बढ़ोत्तरी हो रही है या दानवी गुणों की।

लोकविद्या–वार्त्ता संगठित विद्या और 'समाज में विद्या' के आपसी रिश्तों पर समाज में चिन्तन और बहस का रचनात्मक कार्य है। लोकविद्या–वार्त्ता विद्या जगत में धुंध को हटाने और सामाजिक पहल के उस विचार को बुनने का लक्ष्य रखती है जो सामान्यजन और सामान्य जीवन की खुशहाली और प्रतिष्ठा की बुनियाद पर खड़ा हो।

(विद्या आश्रम, वाराणसी से प्रकाशित, लोकविद्या संवाद, अंक–16, फरवरी 2006 से साभार)

●

समाज में ज्ञान पर अगली व्यापक वार्त्ता नैरोबी में...

विश्व सामाजिक मंच, 2007

नैरोबी, केन्या

20 से 25 जनवरी, 2007

इस अवसर पर हम बौद्धिक सत्याग्रह के विचार को और विस्तार देना चाहते हैं। यह उन व्यक्तियों, संस्थाओं व संगठनों को निमंत्रण है जो हमारे साथ इसके आयोजन में भी शामिल होना चाहते हैं। विद्या वार्त्ता, कार्यशाला, सम्मेलन, पोस्टर प्रदर्शनी के अलावा अन्य विधाओं में कार्यक्रम आयोजन के विचार भी आमंत्रित हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के जाल में जकड़ी दुनिया का भविश्य क्या है?
मनुश्य समाज का भविश्य कैसा हो?